19.सेनापति: ये अनूपशहर के रहनेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम गंगाधार, पितामह का परशुराम और गुरु का नाम हीरामणि दीक्षित था। इनका जन्मकाल संवत् 1646 के आसपास माना जाता है। ये बड़े ही सहृदय कवि थे। ऋतुवण् ान तो इनके ऐसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है। इनके ऋतुवर्णन

में प्रकृति निरीक्षण पाया जाता है। पद विन्यास भी इनका ललित है। कहीं कहीं विरामों पर अनुप्रास का निर्वाह और यमक का चमत्कार भी अच्छा है। सारांश यह कि अपने समय के ये बड़े भावुक और निपुण कवि थे। अपना परिचय इन्होंने इस प्रकार दिया है,

दीक्षित परशुराम दादा हैं विदित नाम,

जिन कीन्हें जज्ञ, जाकी विपुल बड़ाई है।

गंगाधार पिता गंगाधार के समान जाके,

गंगातीर बसति 'अनूप' जिन पाई है

महा जानमनि, विद्यादान हू में चिंतामनि,

हीरामनि दीक्षित तें पाई पंडिताई है।

सेनापति सोई, सीतापति के प्रसाद जाकी,

सब कवि कान दै सुनत कविताई है

इनकी गर्वोक्तियाँ खटकती नहीं, उचित जान पड़ती हैं। अपने जीवन के पिछले काल में ये संसार से कुछ विरक्त हो चले थे। जान पड़ता है कि मुसलमानी दरबारों में भी इनका अच्छा मान रहा, क्योंकि अपनी विरक्ति की झोंक में इन्होंने कहा है,

केतो करौ कोइ, पैए करम लिखोइ, तातें,

Scanned with CamScanner

दूसरी न होइ, उर सोइ ठहराइए।

आधी तें सरस बीति गई है बरस, अब

दुर्जन दरस बीच रस न बढ़ाइए

चिंता अनुचित, धारु धीरज उचित,

सेनापति ह्वै सुचित रघुपति गुन गाइए।

चारि बर दानि तजि पायँ कमलेच्छन के,

पायक मलेच्छन के काहे को कहाइए

शिवसिंहसरोज में लिखा है कि पीछे इन्होंने क्षेत्र संन्यास ले लिया था। इनके भक्तिभाव से पूर्ण अनेक कवित्त 'कवित्तरत्नाकर' में मिलते हैं, जैसे

महा मोहकंदनि में जगत जकंदनि में,

दिन दुखदुंदनि में जात है बिहाय कै।

सुख को न लेस है, कलेस सब भाँतिन को;

Scanned with CamScanner

सेनापति याहीं ते कहत अकुलाय कै

आवै मन ऐसी घरबार परिवार तजौं,

डारौं लोकलाज के समाज विसराय कै।

हरिजन पुंजनि में वृंदावन कुंजनि में,

रहौं बैठि कहूँ तरवर तर जाय कै

यद्यपि इस कवित्त में वृंदावन का नाम आया है, पर इनके उपास्य राम ही जान पड़ते हैं क्योंकि स्थान स्थान पर इन्होंने 'सियापति', 'सीतापति', 'राम' आदि नामों का ही स्मरण किया है। कवित्तरत्नाकर इनका सबसे पिछला ग्रंथ जान पड़ता है क्योंकि उसकी रचना संवत् 1706 में हुई है, यथा,

संवत् सत्रह सै छ में, सेइ सियापति पाय।

सेनापति कविता सजी सज्जन सजौ सहाय

इनका एक ग्रंथ 'काव्यकल्पद्रुम' भी प्रसिद्ध है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इनकी कविता बहुत मर्मस्पर्शिनी और रचना बहुत ही प्रौढ़ और प्रांजल है। जैसे एक ओर इनमें पूरी भावुकता थी वैसे ही दूसरी ओर चमत्कार लाने की पूरी निपुणता भी। श्लेष का ऐसा साफ उदाहरण शायद ही और कहीं मिले,

नाहीं नाहीं करै, थोरो माँगे सब दैन कहै,

Scanned with CamScanner

मंगन को देखि पट देत बार बार है

जिनके मिलत भली प्रापति की घटी होति,

सदा सुभ जनमन भावै निराधार है

भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य,

कन कन जोरै, दानपाठ परवार है

सेनापति वचन की रचना निहारि देखौ,

दाता और सूम दोउ कीन्हें इकसार है

भाषा पर ऐसा अच्छा अधिकार कम कवियों का देखा जाता है। इनकी भाषा में बहुत कुछ माधुर्य ब्रजभाषा का ही है, संस्कृत पदावली पर अवलंबित नहीं। अनुप्रास और यमक की प्रचुरता होते हुए भी कहीं भद्दी कृत्रिमता नहीं आने पाई है। इनके ऋतुवर्णन के अनेक कवित्त बहुत से लोगों को कंठस्थ हैं। रामचरित संबंधी कवित्त भी बहुत ही ओजपूर्ण हैं। इनकी रचना के कुछ नमूने दिए जाते हैं,

बानि सौं सहित सुबरन मुँह रहैं जहाँ,

धरत बहुत भाँति अरथ समाज को।

संख्या करि लीजै अलंकार हैं अधिक यामैं,

Scanned with CamScanner

राखौ मति ऊपर सरस ऐसे साज को

सुनौ महाजन! चोरी होति चार चरन की,

तातें सेनापति कहै तजि उर लाज को।

लीजियो बचाय ज्यों चुरावै नाहिं कोउ, सौंपी

वित्ता की सी थाती में कवित्तन के ब्याज को

वृष को तरनि, तेज सहसौ करनि तपै,

ज्वालनि के जाल बिकराल बरसत है।

तचति धारनि जग झुरत झुरनि, सीरी

छाँह को पकरि पंथी पंछी बिरमत है

सेनापति नेक दुपहरी ढरकत होत

धामका विषम जो न पात खरकत है।

Scanned with CamScanner